तृतीय अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र-परियोजना का अनुशीलन'

तृतीय अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र-परियोजना का अनुशीलन'

प्रस्तावना :

मानव जीवन का चित्रण ही साहित्य का मुख्य उद्देश्य होता है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा में मानव के समग्र जीवन का चित्रण करने की संभावना अधिक होती है। इस संबंध में डॉ. गणेशन ने लिखा है - "मनुष्य को समझना और उसके सामाजिक जीवन एवं वैयक्तिक अन्त:सत्ता की व्याख्या करना उपन्यास का ध्येय होता है। संपूर्ण मानव जाति में सामूहिक, देशीय और वैयक्तिक विशेषताओं के कारण जो अनन्त वैविध्य है, उसका अध्ययन सचमुच रोचक विषय है। मनुष्य चरित्र में संकुलता, विषमता और विविधता न होती तो उसको समझना कितना ही सरल होता; किंतु तब मनुष्य इतना रोचक प्राणी भी न होता। सामाजिक तथा वैयक्तिक आधार पर इस वैविध्य का और वैविध्य के बीच की एकता का अध्ययन करना ही उपन्यास में चरित्र-चित्रण का ध्येय है।"[1]

व्यक्ति और समाज का पारस्पारिक संघर्ष और समन्वय है, जीवन। व्यक्ति को सदा सामाजिक परिस्थितियों से संघर्ष करते रहना पडता है - यहाँ संघर्ष से तात्पर्य आर्थिक प्राप्ति के लिए परिस्थितियों के विरुद्ध होने वाले संघर्ष से नहीं है, मनुष्य के स्वतंत्र और स्वच्छन्द व्यक्तित्व में बाधा डालने वाली सामाजिक परिस्थितियों के बीच में अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने की सचेष्ट प्रवृत्ति से ही है - किंतु उस समाज से समझौता करके उसमें ही अपने जीवन को सफल बनाना पडता है। इस तरह उसका वैयक्तिक अस्तित्व एवं सामाजिक अस्तित्व दोनों का ही अपना-अपना महत्त्व है। और उपन्यास में दोनों का अध्ययन आवश्यक है। मानव जीवन में जो वैविध्य है उसका आधार व्यक्तित्व ही हैं, और सामूहिकता या सामाजिकता का आधार किसी प्रकार की समानता ही है।

3.1 पात्र एवं चरित्र-चित्रण का महत्त्व :

उपन्यास में पात्रों का चित्रण किया जाता है। उपन्यासकार अपनी शैली से पात्र का व्यक्तित्व पाठकों के सम्मुख खडा करता है। डॉ. सिनहा इस संबंध में लिखते है - "कई उपन्यासों

---

1. डॉ. गणेशन - हिंदी उपन्यास साहित्य अध्ययन, पृ. 229.

के प्रारंभ में प्राय: यह लिखा रहता है कि इसके पात्र पूर्णतया कल्पित हैं। प्रत्युत यह सत्य नहीं, एक भ्रमपूर्ण कथन ही होता है। इसकी एकता को सीमा मात्र यहीं तक सीमित होती है, कि पाठक उन विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों से संपन्न व्यक्ति की तो जानता है, पर उसके परिचित का वह पात्र नहीं है, जो औपन्यासिक पात्र का नाम है। केवल नाम का अंतर हो सकता है। पर मूलभूत सत्य यही है, कि उपन्यास के पात्रों और मानवीय जीवन के पात्रों में विशेष अंतर नहीं होता। उपन्यासकार मानव जीवन ही जीता है। कोई दैवी जीवन नहीं। हमारे मध्य ही वह रहता है। हमारी जीवनगत विषमताओं एवं दुरुहताओं से स्वयं उसका भी साक्षात्कार होता है। और उसकी कटुता का पान उसे भी करना पडता है। अत: स्वाभाविक है कि वह उस जीवन की अपेक्षा नहीं कर सकता। और उसी से प्रेरणा ग्रहण कर अपने पात्रों का स्वरूप निर्धारित करता है।''[1]

''ईश्वर इस मानव-सृष्टि की रचना करता है। उपन्यासकार अपने उपन्यास संसार की। रचनाकार दोनों ही हैं; पर दोनों में तात्विक अंतर होता है। ईश्वर ऐसे जाने कितने व्यक्तियों का निर्माण करता हैं, जो बिल्कुल ही दिलचस्प नहीं होते और उनके साथ उठना - बैठना या उनसे निकटता स्थापित करना हम श्रेयस्कर नहीं समझतें। पर उपन्यासकार इसके विपरीत ऐसे पात्रों का सृजन करता है, जो दिलचस्प होते हैं, उनका उपन्यास संसार में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जबकि ईश्वर द्‌वारा रचे गए सभी व्यक्ति इस संसार में महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करें, यह आवश्यक नहीं, साथ ही संभव भी नहीं। कहा जा सकता है कि, उपन्यास में भी तो गौण पात्र होते हैं। हाँ, पर उपन्यासकार उन्हीं गौण पात्रों का निर्माण करता है। जो कथानक विकास की दृष्टि से अनिवार्य होते है, अन्यथा नहीं। एक प्रकार से उपन्यासकार का निर्माण क्षेत्र कुछ सीमित होता हैं, ईश्वर का अत्यंत व्यापक।''[2]

''पात्रों के सम्बन्ध में एक बात और भी आवश्यक होती है। उनका वास्तविक होना अत्यंत आवश्यक होता है। अवास्तविक एवं अयथार्थ प्रतीत होने वाले पात्र पाठकों के ऊपर कोई स्थायी प्रभाव डालने में असमर्थ रहते हैं। वे क्षण-भर को आकर्षित भले ही कर लें। पर प्रभाव के स्थायित्व और आकर्षण की क्षणिकता में बडा अंतर है। वास्तव में उपन्यास रचना किसी निश्चित उद्‌देश्य को सामने रखकर होती हैं। केवल मनोरंजन या कल्पना लोक का निर्माण करना आज

---

1. डॉ. सुरेश सिन्‌हा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 63, 64.
2. वही, पृ. 67.

उपन्यासकार का दायित्व नहीं है। आज उसका दायित्व, सत्यान्वेषण, मूल्यनिर्माण और दिशा-निर्देशन का है। अपने अनुभवों को उपन्यास के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाना ही उसका उद्देश्य होता है और इसकी पूर्ति औपन्यासिक पात्र ही करते हैं। अतः इन पात्रों का वास्तविक होना आवश्यक है, क्योंकि तभी उपन्यासकार का उद्देश्य भी सफल होता है।''[1]

संक्षेप में हम कह सकते हैं, कि उपन्यासकार पात्रों के माध्यम से ही जीवन की व्याख्या करता है। पात्रों के व्यक्तित्व से जीवन मूल्यों को स्थापित करता है।

3.1.1 चरित्र-चित्रण का महत्त्व :- उपन्यास में चरित्र-चित्रण का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। हिंदी पर्यायवाची कोश में चरित्र के - ''आचरण, आचार, विचार, आचार-व्यवहार, चाल-चलन, शील, शील स्वभाव, सत्चरित्रता, सदाचार, आत्मकथा, इतिवृत्मत, कथा, इतिहास, जीवनी और चित्रण के 'अंकन' उरेहन, चित्रांकन, निरूपण, वर्णन आदि अर्थ दिए हैं।''[2]

चरित्र-चित्रण उपन्यासकार की सृष्टि होते हुए भी अपने मानव होने और ईश्वरीय सृष्टि होने का आभास देते हैं। यद्यपि वे मानव की पूर्ण प्रतिकृति नहीं होते। उनमें मानवीयता का फिर भी, पूर्ण गुण होता है और उपन्यासकार अपने कौशल से उनमें ऐसे गुण भर देता है कि उनसे हमारा निकटतम तादात्म्य स्थापित हो जाता है और उनके सुख-दुःख हमारे अपने से प्रतीत होते है। पर इसकी विपरित अवस्था से उपन्यासकार को बचना चाहिए। क्योंकि वह उसकी कला के महत्त्व को न्यून कर उसके उद्देश्य को असफल कर देती है। उसे अपने चरित्रों का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए। जिनसे उनके पूर्णतया सत्य होने का भ्रम प्रतीत हो और पाठक उन्हें दिव्य या अलौकिक अथवा पूर्णतया अविश्वसनीय कहकर टाल दें। उनमें इतनी यथार्थता का तो आभास होना ही चाहिए कि पुस्तक समाप्त करने के पश्चात भी वे हमारी चेतना पर छाए रहें। पात्र निर्माण का यहीं वस्तुतः सर्वप्रमुख आधार होता है, जिस पर उनकी सफलता असफलता आधारित रहती है। यहाँ हमें पात्रों के मनोविज्ञान का भी ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक पात्रों का अपना मनोविज्ञान होता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे साधारण मानव जीवन में प्रत्येक व्यक्तियों का। इसी से मानव-मानव के बीच स्वाभाविक मित्रता स्थापित होती है, और उनका भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व प्रतिध्वनित होता है। जिस प्रकार इस सृष्टि के सृजनकर्ता का मनोविज्ञान उसकी अपनी ही रचना

---

1. डॉ. सुरेश सिनहा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 68.
2. डॉ. भोलानाथ तिवारी - हिंदी पर्यायवाची कोश, पृ. 173, 180.

व्यक्तियों के मनोविज्ञान से भिन्न होता है। उसी प्रकार उपन्यासकार का मनोविज्ञान भी पात्रों के मनोविज्ञान से भिन्न होता है।

उपन्यासों में चरित्र-चित्रण की अनेक विधियाँ हैं। उन्हें हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं - 1) बहिरंग प्रणाली (Objective method)

2) अंतरंग प्रणाली (Subjective method)

वैसे चरित्र-चित्रण की दो पद्धतियाँ और मानी जा सकती है - प्रत्यक्ष या विश्लेषणात्मक और अप्रत्यक्ष या नाटकीय। पर इन प्रणालियों की विशेषताओं का समावेश सरलता से ऊपर के वर्गीकरण में किया जा सकता है। इसलिए ऊपर के वर्गीकरण को ही स्वीकार करना अधिक सुविधाजनक होगा।

1) **बहिरंग प्रणाली** :- "इस प्रणाली में पात्रों का चरित्र-चित्रण कई पद्धतियों से किया जाता है। प्रथम तो उनके नामकरण इस प्रकार किए जाते हैं, जिससे उनके चरित्र का एक हल्का आभास पहले ही पाठकों को प्राप्त हो जाता है। उपन्यासकार अपने पात्रों का नाम बहुत चुनकर रखता हैं, जिससे उसकी प्रवृत्ति स्पष्ट हो सके। कल्याणी, सुजाता, प्रशांत, श्रद्धा, अपराजिता आदि ऐसे ही नाम है, जिनसे इन पात्रों की गंभीरता एवं जीवनगत करुणा का परिचय प्राप्त होता है।

पर इस प्रणाली का सबसे बडा दोष यह है, कि पात्रों के क्रिया-कलापों में पाठकों का कोई भाग नहीं होता। सारी भूमिका उपन्यासकार को ही निभानी पडती है, जिसके कारण उपन्यासों की रोचकता पर तीव्राघात पहुँचता है। यही कारण है कि, कुशल उपन्यासकार कलात्मक ढंग से नाटकीय प्रणाली या अंतरंग प्रणाली पर ही अधिक बल देते हैं। क्योंकि उससे वे उपन्यासों की रोचकता बराबर बनाए रखते हैं और स्वयं पाठकों को भी विचार-विमर्श एवं सोचने समझने के लिए आमंत्रित करते हैं।"[1]

2) **अंतरंग प्रणाली** :- हिंदी में कहावत है 'जो न देखे रवि वो देखे कवि', जहाँ सूर्य की किरणें पहुँच नहीं सकती वहाँ कवि की दृष्टि पहुँच जाती है। परकाया प्रवेश कर लेखक पात्रों के अंत:करण को पहचानकर चित्रण करता है। "वस्तुत: मनुष्य वह नहीं है, जो हम आप उसे देखते हैं, या वह स्वयं ही देखने में लगता है। मनुष्य से भी बलवती होती है, उसकी अंत:प्रेरणाएँ, जो

---

1. डॉ. सुरेश सिनहा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ.86, 87.

पग पग पर उसे निर्देशित करती है, उसके चरित्र को दिशाएँ देती है और उसका निर्माण करती हैं। ये अंत:प्रेरणाएँ उसके प्रत्येक आचरण, प्रत्येक व्यवहार और प्रत्येक बात के मूल में होती है। बिना इन अन्त:प्रेरणाओं को समझे हम कभी भी उस व्यक्ति को भली-भाँति नहीं समझ सकते हैं क्योंकि मनुष्य का चरित्र उस आइस वर्ग के समान है जिसका अधिकांश भाग पानी के भीतर रहता है और कुछ ही भाग ऊपर रहता है। बर्फ के उस पूरे भाग को समझने के लिए हमें पानी के भीतर छिपे हुए उस बर्फ के शेष भाग को भी भली-भाँति समझना होगा। केवल ऊपरी भाग के आधार पर कोई निर्णय दे देना बुद्धिमत्तापूर्व नहीं होगा। क्योंकि वह अपूर्ण ज्ञान पर आधारित निर्णय है। उपन्यासकार भी अपने पात्रों के संबंध में पाठकों को पूर्ण ज्ञान देने के लिए उनकी अंत:प्रेरणाओं को स्पष्ट करता है। यही अंतरंग प्रणाली कहलाती है।''[1] इस प्रकार बहिरंग एवं अंतरंग प्रणाली से लेखक विवेच्य पात्रों का सच्चा एवं सजीव चित्रण करने में सफल होता है। काल्पनिक होते हुए भी वास्तव चरित्र निर्माण में लेखक कामयाब हुए हैं।

3.2 चरित्र-चित्रण के भेद :-

किसी भी व्यक्ति के आचरण का किया हुआ अंकन चरित्र होता है। उपन्यास साहित्य में पात्रों के चरित्र-चित्रण के द्वारा उसके व्यक्तित्व के अंगों का परिक्षण किया जाता है। अत: चरित्र-चित्रण के भेद इसप्रकार है -

3.2.1 नायक, नायिका और सहायक पात्र :- कहना होगा कि पात्र आधारित ऐसे सभी उपन्यास नायक या नायिका प्रधान ही होते हैं। यदि ऐसा न हुआ तब भी पात्रों के संसार में कुछ प्रमुख पात्र होते हैं और कुछ सहायक पात्र। प्रमुख पात्रों के साथ कुछ सहायक पात्र भी होते हैं, क्योंकि किसी का भी जीवन नितांत अंकेले नहीं चल सकता। सहायक पात्र ही प्रमुख पात्र की जीवन गाथा को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं।

3.2.2 सद्पात्र एवं खलपात्र :- 'पात्रों का दूसरा शास्त्रीय विवेचन सद्पात्र एवं खलपात्र के रूप में आता है। फिल्मों में विलैन शब्द बडा मशहूर है। यहीं खलपात्रत्व है। ऐसे चरित्र नकारात्मक कार्य करते हैं। अत्याचारी निरंकुश स्वार्थी होते हैं। हमेशा बुरे कार्य में लगे रहते हैं। ये पात्र अच्छे कार्य में विघ्न डालने वाले, जीवन विरोधी चरित्र होते हैं। कथाकृति को आगे बढ़ाने में इनकी भूमिका बहुत महत्त्व की होती है। इसीप्रकार सद्पात्र सदा अच्छे कार्य करनेवाले लोग होते हैं।

1. डॉ. सुरेश सिनहा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ.88.

16810

ये सकारात्मक कार्यों में लगे रहते हैं। समाज नेता होते हैं। मूल्यों के प्रति समर्पित होते हैं। सच्चे-ईमानदार-कर्मठ एवं सबके मददगार होते हैं। सारे दुख-संघर्ष झेलते हैं, परंतु सत्य व न्याय से डिगते नहीं।''1

3.2.3 प्रतिनिधि पात्र-विशिष्ट पात्र:- विशिष्ट पात्र व्यक्तिनिष्ठ होते हैं। विरल होते हैं। उनका कोई वर्ग नहीं होता। वे अपनी तरह के अकेले होते हैं। ये अपनी भावनाओं में जीते हैं। विचारों से चलते हैं। भीड का हिस्सा नहीं बनते। कभी अनोखे भी लगते है। दुनिया के नियमों से संचालित नहीं भी होते। इसके विपरीत प्रतिनिधि पात्र किसी वर्ग या समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं।

3.2.4 स्थिर पात्र-गतिशील पात्र :- चौथे प्रकार का एक विभाजन स्थिर एवं गतिशील पात्रों के रूप में होता है। सक्रिय एवं सदा कुछ न कुछ करके जीवन व कथा को आगे बढ़ाने वाले पात्र गतिशील होते हैं। ये खल व सत् दोनों हो सकते हैं। निरंतर परिवर्तनशील होते हैं। जबकि स्थिर पात्र अपरिवर्तनशील व उदासीन होते हैं। उनके कारण कहीं कुछ परिवर्तन नहीं हो पाता। आगे नहीं बढ़ता। स्थिर पात्र बहुत कम होते हैं।

इस प्रकार 'पात्र' उपन्यास का प्रमुख आधार होते हैं। पात्रों पर पूरा उपन्यास निर्भर होता है। ''मानवता की सामान्य भूमि पर लेख की कूची से जो रंग भरता है वह अव्याप्ति या अतिरंजना से बचकर सजीव पात्रों को जन्म देता है। सजीव पात्र हमारे वास्तविक जगत की प्रतिकृति होते हैं। जिनके चरित्र के विकास का उपन्यासकार कल्पना के द्वारा साक्षात्कार कर लेता है। और उसे औपन्यासिक योजना के द्वारा प्रस्तुत करता है।''[2] पात्र अपनी विशिष्ट चारित्रिक विशेषताओं से युक्त होते हैं।

3.3 'कल्लो' उपन्यास में चित्रित पात्र परियोजना का अनुशीलन :

सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास में प्रमुख पात्र तथा गौण पात्रों का चित्रण मिलता है। इस उपन्यास में प्रमुख पात्र के रूप में कली (कल्लो), युवक (परदेसी) दृष्टिगोचर होते हैं। तो गौण पात्रों के रूप में कैलाश, चौधरी, राजेश और शीला, सत्या, विधवा औरत, प्रो.अंशु आदि का चरित्र परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा गौण पात्रों का चित्रण इस प्रकार है -

---

2. डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी - उपन्यास विमर्श, पृ. 9
2. सं. मधुरेश - क्रांतिकारी यशपाल - एक समर्पित व्यक्तित्व, पृ. 142.

3.3.1 प्रमुख पात्र एवं चरित्र-चित्रण :- उपन्यास में पात्र मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं - प्रमुख पात्र तथा गौण पात्र। उपन्यास में जो पात्र कथानक से सीधा संबंध रखते हैं और कथानक को गति देते हुए विकसित भी होते हैं। उन्हें प्रमुख पात्र कहा जाता है। 'कल्लो' उपन्यास के प्रमुख पात्र युवक (परदेसी) और कल्लो (कली) हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार हैं -

3.3.1.1 युवक (परदेसी) :- 'कल्लो' उपन्यास में केंद्रिय पुरुष पात्र युवक है। उपन्यास की कथा वस्तु में आरंभ से लेकर अंत तक युवक का महत्त्वपूर्ण स्थान है।युवक की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार हैं -

3.3.1.1.1 उपन्यास का नायक :- युवक (परदेसी) 'कल्लो' उपन्यास का नायक है। जिसे कली 'परदेसी' नाम से पुकारती है। युवक को गाँव के प्रति आकर्षण हैं तथा गाँव के लोगों की मदद करने में उसकी रूचि है। वह गाँव-गाँव जाकर लोगों की मदद करता है। गाँवों में सुधार करता है। वह किसी भी गाँव में ज्यादा दिन ठहरता नहीं, गाँव में सुधार करके वह दूसरे गाँव के लिए निकल पडता है।

3.3.1.1.2 समाजसेवक :- युवक (परदेसी) गाँव-गाँव जाकर लोगों की समस्या का हल ढूँढता है, लोगों की मदद करता है। ऐसे ही एक दिन वह कली के गाँव आता है। वहाँ वो स्कूल खोलता है, रास्ते बनवाता है, अस्पताल तथा डाकखाने की सुविधा करवाता है। वह गाँव सरकार पर निर्भर रहे हुए अनेक साल होने पर भी उस गाँव में कोई भी सुविधा नहीं थी। युवक कुछ ही दिनों में वे सारी सुविधाएँ उस गाँव में लाता है। इससे उसका सेवाभावी गुण प्रकट होता है। युवक के इस कार्य से गाँव के सभी लोग बहुत खुश हो जाते हैं। अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास का युवक समाजसेवक के रूप में सामने आता है।

3.3.1.1.3 व्यवहार कुशल :- युवक के चरित्र में व्यवहारकुशलता है। युवक अपनी बात इतनी प्रभावी ढंग से कहता है कि सहसा उसकी बात कोई नहीं टालता। उसके लोग उसकी बात तुरंत मान लेते है। इसी कारण तो वह विधवा के लिए शहर के बड़े-बड़े आदमियों से मिलकर उनको विधवा औरत की करुण कहानी सुनाता है और उसके बदले वह उनसे मदद लेता है। लोग उसे रुपये देते हैं। इतसहर युवक विधवा औरत के लिए 10,000 की राशि इकट्ठा करता है और उसे गरीब विधवा को देता है। इससे युवक का व्यवहारकुशलता यह गुण प्रकट होता है।

3.3.1.1.4 अत्याचार का विरोधी :- युवक में अत्याचार विरोधी पहलू दिखाई देता है। जब गाँव के नम्बरदार चौधरी का बेटा कैलाश कली की अस्मत लूटने की कोशिश करता है, तब युवक वहाँ आकर कली को बचाता है। लेकिन दूसरे ही दिन वह गाँव के सभी लोगों के सामने बिना किसी का नाम लिए चौधरी से पूछता है कि, "अगर कि हमारे गाँव का एक लडका हमारे ही गाँव की एक लडकी की अस्मत लूटने की कोशिश करे तो उसे क्या दण्ड मिलना चाहिए।" तब चौधरी कहते हैं- "मैं उस लडके को घास में जीवित जला दूँगा।"[1] तब युवक उन्हें बताता है, कि यह कूकृत्य आपके बेटे कैलाश ने ही किया है। तब वे उसे जीवित जला देने के लिए तैयार होते हैं। लेकिन युवक और गाँव के लोगों के कहने पर कैलाश को गुड का लेप लगाकर उसके हाथ-पाँव बाँधकर उसे चीटियों के सामने फेंक दिया जाता है। इसप्रकार कली पर किए अत्याचार का दण्ड युवक द्वारा कैलाश को दिया जाता है। युवक अत्याचार विरोधी है।

3.3.1.1.5 विधवा की सहायता :- युवक विधवा औरत के प्रति आस्था रखता है। जब वह शहर प्रधानजी को मिलने जाता है, तब उसे पता चलता है, कि प्रधानजी किसी काम से अस्पताल में गए है। तो युवक उनसे मिलने के लिए अस्पताल जाता है। वहाँ उसे एक औरत का पति मरने की खबर मिलती है। उस औरत का इस दुनिया में कोई भी नहीं है। कोई भी आदमी उस औरत की मदद नहीं कर रहा था, तब युवक वहाँ जाकर कहता है - "बहिन मुझे बहुत दुख है। एक बहुत बडी हानि है यह। किंतु यह हानि जैसे-तैसे तुम्हें सहनी ही होगी। ईश्वर की मर्जी के सामने हमें झुकना ही पडता है। अब तुम धीरज धरो।"[2] और उसने लोगों की मदद लेकर उस औरत के पति का अंतिम संस्कार करता है। बाद में उसने विधवा औरत को रहने के लिए एक कमरा दिलवा दिया। "शहर के बडे लोगों को विधवा की दयनीय अवस्था को बताकर कुछ राशि इकठ्ठा करके उसे देता है। और प्रधानजीसे उसके बारे में बताकर उसे प्रतिमाह 100 रु. पेन्शन भी दिलवा देता है। युवक निस्वार्थ भाव से उस गरीब, असहाय विधवा औरत की मदद करता है।"[3]

इस प्रकार 'कल्लो' उपन्यास के युवक (परदेसी) में समाजसेवी, विधवा की सहायता करनेवाला, अत्याचार का विरोधी तथा व्यवहारकुशल आदि गुण दिखाई देते हैं।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 52.
2. वही, पृ. 41.
3. वही, पृ. 66, 67.

3.3.2 कल्लो (कली) :- 'कल्लो' उपन्यास में केंद्रिय स्त्री पात्र 'कल्लो' (कली) है। उपन्यास की कथा कल्लो के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द घुमती है। कथानक के आरंभ से लेकर अंत तक कल्लो (कली) का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कल्लो (कली) की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार है -

3.3.2.1 उपन्यास की नायिका :- 'कल्लो' (कली) उपन्यास की नायिका है। कल्लो गाँव की भोली-भाली, अनपढ़ लड़की है। वह युवक की ओर आकर्षित होती है। विवेच्य उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक कली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कल्लो ग्रामजीवन में पली लड़की है। लेखक ने उसकी सादगी को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

3.3.2.2 प्रेमिका के रूप में :- कल्लो के व्यक्तित्व की एक विशेषता है। वह प्रेमी स्त्री पात्र है। वह अपने घर आए युवक से प्रेम करती है। वह उसका बहुत खयाल रखती है। वह उसके साथ रहना चाहती है, लेकिन युवक कहता है - "मेरा कोई घर नहीं। मेरा कोई गाँव नहीं, मैं तो बेघर हूँ।" तब कली उसे कहती है - "जब राम जंगल में गए तो सीता भी उनके साथ ही गई। उनका जंगल में न कोई घर था, न कोई ठिकाना था। इसीलिए मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगी।"[1] इससे यह स्पष्ट होता है, कि कल्लो अपना सारा जीवन युवक के साथ ही बिताना चाहती है। वह युवक के प्रति आकृष्ठ होती है। इसप्रकार लेखक ने कल्लो का व्यक्तित्व युवक की प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है।

3.3.2.3 स्पष्टवादी :- कल्लो के व्यक्तित्व की विशेषता है उसकी स्पष्टवादिता। वह किसी भी बात को कहने से डरती नहीं। उसे वह स्पष्टता से कहती है। जब गाँव के चौधरी के बेटे कैलाश उसका रास्ता रोकता है तब कली स्पष्टता से कहती है - "बडे लोगों के रास्ते से हट जाने में ही भलाई हैं। छोटे चौधरी ! कालिज में दाखिल हुए इतने साल हो गए। बात करना अभी तक नहीं सिखें। वही गंवार के गंवार रहे। वहाँ तो केवल मोटी-मोटी किताबें ही रटते रहते होंगे।... तमीज कैसे आती ....।"[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कल्लो स्पष्टवादी है।

3.3.2.4 शरारती कल्लो :- कल्लो के व्यक्तित्व में शरारत यह भी एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। कल्लो युवक के साथ हर वक्त मजाक करती रहती है। वह उसे बुद्धू बनाती है। उससे लडाई-

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 10.
2. वही, पृ. 11.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

झगडा करती है। "एक दिन वह युवक के चारपाई की निवार निकाल देती है।"[1] और उस पर केवल सफेद चद्दर बिछा देती है। जैसे ही युवक चारपाई पर लेटता है, तो सीधा जमीन पर गिरता है। तब कली ताली पीटकर हँसती है। फिर एक दिन कली युवक को गिलास में दूध देती है, युवक उसे चम्मच माँगता है, तो वह कडछी लेकर आती है, और कहती है - "कल बाबा तुम्हारे मुँह का माप ले गए थे, उसी के अनुसार यह चम्मच बनवा लाए। देखों, कहीं, छोटा-बड़ा तो नहीं रह गया?"[2] इससे यह पता चलता है, कि कल्लो बहुत ही शरारती है।

3.3.2.5 भावुकता :- कल्लो के व्यक्तित्व में भावुकता यह एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। कल्लो युवक के प्रति अत्यंत भावुक दिखाई देती है। जब युवक गाँव छोडकर चले जाने के लिए निकलता है, तब कली को यह महसूस होता है कि युवक उसे छोडकर जा रहा है, और वह चिल्लाती है, वह युवक को कहती है - "तुम जा रहे हो न? वह रोती है। उसकी आँखों में मोती गिर रहे थे।"[3] इससे यह स्पष्ट होता है, कि कली युवक के बारे में ज्यादा ही भावुक दिखाई देती है।

3.3.2.6 देहाती संस्कार :- कल्लो गाँव में रहनेवाली सरल प्रवृत्ति की भोली-भाली लडकी है। उसमें न लोभ है, न कोई स्वार्थ, वह गाँव में रहनेवाली एक अनपढ लड़की है। जिसे शहर की गंध तक नहीं है। युवक से वह शहर के बारे में जानना चाहती है। कल्लो एक संस्कारशील लडकी है। उसमें देहात के सभी गुण आए हैं। इस प्रकार कल्लो का व्यक्तित्व स्पष्टवादी, शरारती तथा भावुक आदि विशेषताओं से परिपूर्ण दिखाई देता है।

3.3.3 गौण पात्र :- उपन्यास में प्रमुख पात्र जितने महत्त्वपूर्ण होते हैं उतने ही गौण पात्र भी। वे पात्र मुख्य कथा को गतिशील रखने में सहायक होते हैं। वे अपनी वर्गगत, जातिगत प्रवृत्तियों को उभारते हैं और कथा विकास प्रक्रिया में अपना स्थान बना लेते हैं। सुदर्शन भाटिया जी ने युवक (परदेसी) तथा कल्लो (कली) को प्रमुख पात्रों के अंतर्गत उनकी चारित्रिक विशेषताओं से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है, उसी तरह 'कल्लो' के गौण पात्रों में कैलाश, नम्बरदार चौधरी, सत्या, राजेश शीला, प्रोफेसर अंशु और गरीब विधवा औरत इन पात्रों को भी उनको अपने वर्गगत परिवेश के आधार पर अंकित किया गया है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 35.
2. वही, पृ. 69.
3. वही, पृ. 71.

3.3.1 कैलाश :- कैलाश 'कल्लो' उपन्यास का गौण पात्र है। यह कल्लो के गाँव के चौधरी का बेटा है। गाँव के लोग उसे छोटा चौधरी, छोटा नम्बरदार, छोटा बाबू कहते हैं। वह मण्डी शहर के कालेज में पढ़ता है। वह अपने कालेज की सहपाठी शीला से प्रेम करता है, लेकिन वह अपनी गाँव की कली से भी प्रभावित रहता है और उसे पाना चाहता है।

कालेज को छुट्टियाँ लगने पर वह अपने गाँव आता है, बस से उतरते ही वह सोचता है, कि - "गाँव में मेरे पिताजी का बोल-बाला है। कौन है जो उनके सामने खडा हो सके। वह जो चाहे करे। इसीलिए मैं भी जो चाहूँ करूँ। उनके संकेत पर तो परिवार के परिवार मिटा दिया जाऐ तो भी उफ तक न होगी।"[1] इसीलिए कली तो भोली लड़की सादगी में पली है। कैलाश के मन में भाँति-भाँति की कुभावनाएँ थी। उसका मन मैला था। वह कली के जीवन के साथ खिलवाड करने की मनशा उसकी थी।

जब वह गाँव आता है, तब वह कली से मिलता है, लेकिन कली उसे देखकर एक ओर हट जाती है। तब कैलाश कली से कहता है कि, "तुमने मुझे पहचाना नहीं। मैं कैलाश हूँ, तुम्हारा कैलाश। मैं तो तुम्हारे बिना शहर में तडपता रहा।" तब कली उसे कहती है - "छोटे चौधरी ! कालिज में दाखिल हुए इतने साल हो गए। बात करना अभी तक नहीं सीखे।"[2] "वही गंवार के गंवार रहे। वहाँ तो मोटी मोटी किताबें ही रटते रहे होंगे। ... तमीज कैसे आती।"[3] यह सुनकर कैलाश बहुत क्रोधित होता है। और वह कली की अस्मत लूटने की सोचता है। वह रात को कली के घर में घुस जाता है, और उसकी अस्मत लूटने की कोशिश करता है, तब वहाँ युवक आकर कली को बचाता है।

युवक भरी सभा में कैलाश की उस हरकत के बारे में सबको बताता है, तब कैलाश के पिता उसे सजा देते है और अंत में कली को बहन मानकर उससे माफी माँगनी पडती है। कुछ दिनों के बाद कैलाश कालेज जाता है, तब उसके मन में युवक के प्रति प्रतिशोध की भावना थी। गाँव में घटित हुआ सारा वृत्तांत वह अपने मित्र राजेश से बताता है, तब राजेश उसके मन में युवक के प्रतिशोध की भावना को और भी भडकाता है और वे दोनों युवक को मारने के लिए गाँव आते हैं। लेकिन गाँव आते ही उन्हें पता चलता है कि युवक गाँव छोडकर चला गया है। तब वे

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 34, 35.
2. वही, पृ. 38.
3. वही, पृ. 58.

युवक को ढूँढने जंगल में जाते हैं। वहाँ युवक उन्हें मिल जाता है। जैसे ही वे युवक को मारने के लिए जाते है, कल्लो वहाँ आकर युवक को बचाती है।

इसप्रकार उपन्यास में कैलाश का चरित्र एक खलनायक की भाँति दिखाई देता है।

3.3.2 नम्बरदार चौधरी :- नम्बरदार चौधरी गाँव के चौधरी है। वे कैलाश के पिताजी है। वे अपने गाँव में किसी से कोई भेदभाव नहीं करते हैं। जब युवक उनसे पूछता है, "गाँव का एक लडका हमारे ही गाँव की लड़की की अस्मत लूटाने की कोशिश करे तो उसे क्या दण्ड मिलना चाहिए?"[1] चौधरी यह प्रश्न सुनकर पहले तो मुस्कुराते है, फिर चेहरे पर गंभीरता लाते हुए बोले - "मेरे गाँव में किसकी मजाल, किसकी हिम्मत जो किसी बेटी पर गाँव की लड़की पर आँख उठा सके। .... क्योंकि तुमने प्रश्न किया है, इसलिए उत्तर देना भी जरूरी समझता हूँ। मैं उस लड़के को घास में जीवित जला दूँगा।"[2] आगे वे कहते है - "यह गाँव है। यहाँ पर जीवन की मान्यताओं पर बल दिया जाता है --- यह असली देव भूमि है ---- पवित्रता से ओतप्रोत गाँव --- शहरी रंगरलियों और धूर्त किस्म के कारनामों से हम दूर है। तभी तो यहाँ शांति है। सुख है। सद्भावना है। ---- तभी पनपता है एक-दूसरे के प्रति प्रेम। .. छोटों के प्रति प्रेम, बड़ों के प्रति आदर - सम्मान।"[3]

चौधरी साहब की ये सारी बातें सुनकर युवक उन्हें बताता है, कि यह पाप उनके बेटे ने ही किया है। यह सुनते ही चौधरी की आँखें लाल हो जाती हैं। वे कैलाश पर बहुत क्रोधित होते हैं। वे लोगों को कहते है - "लगा दो आग ... जिन्दा को आग लगा दो ... जला दो इसे जिन्दा ही।"[4] लेकिन लोगों और युवक के समझाने पर वे कैलाश को मृत्यु दण्ड से कम सजा देते हैं। वे कैलाश के शरीर पर गुड का लेप लगाकर उसके हाथ-पाँव बाँधकर उसे चीटियों के सामने फेंक देते है। और 2 घंटे बाद उसे छोडकर कली से बहिन कहकर उसकी माफी मँगवाते हैं।

आखिर में चौधरी स्वयं हाथ जोडकर कली की माफी माँगते हैं, वे कली से कहते हैं - "बेटी ! मुझे क्षमा कर देना । .... मेरी सन्तान से तुम्हें बहुत दुःख उठाना पडा।"[5] और वे युवक

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 52.
2. वही, पृ. 52.
3. वही, पृ. 52.
4. वही, पृ. 54.
5. वही, पृ. 89.

को भी धन्यवाद देकर कहते है - "जब से आप आए है, प्रतिदिन गाँव की एक न एक बुराई को समाप्त करने में लगे है। कितना अच्छा है, हमारे गाँव अवश्य सुधरेंगे। वह दिन समीप ही है, जब हम इन्हीं गाँवों में स्वर्ग देखेंगे ..... राम राज्य पाएँगे।"[1]

इस प्रकार नम्बरदार चौधरी एक इमानदार एवं उदार चौधरी है। वह अपने बेटे के प्रति भी बहुत कठोरता दिखाते है। वे अपने बेटे को मृत्युदण्ड की सजा सुनाने में भी हिचकिचाते नहीं है। गाँव के मुखिया का धर्म निभाते हैं।

3.3.3 शीला :- शीला कैलाश के कालेज की सहपाठी है। दोनों एक ही क्लास में पढ़ते हैं। शीला और कैलाश दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। लेकिन प्रेम के बारे में शीला के विचार कुछ उच्च दिखाई देते हैं, वह कैलाश से इसके बारे में कहती है - "हमारे परस्पर सम्बन्धों का आधार वासना की पूर्ति न होकर सच्चा प्यार होना चाहिए। हमारे विचार बिल्कुल पवित्र और शुद्ध हों। हम अपने सहपाठियों के सामने एक आदर्श रख सकें, उन्हें यह जतला दें कि स्त्री और पुरुष दोनों कंधे से कंधा मिला कर चलें तो उनकी शक्ति कई गुणा बढ़ सकती है। वह हर कठिनाई को सुगमता से हल कर सकते हैं। असंभव को भी संभव बना सकते है।"[2] शीला समाजसुधार करना चाहती है। इसलिए वह कैलाश से कहती है - "हमारे काम, हमारे कदम इतने अच्छे हो, कि अन्य युवा लोग, अपने आप, हमारे पीछे चलने लगें। हमारी बात में, हमारे कार्य में, हमारे विचारों में सच्चाई झलकनी चाहिए। हमारे शब्दों में वास्तविकता, नेत्रों में स्नेह प्रत्यक्ष दिखना चाहिए।"[3] शीला की ये बातें सुनकर कैलाश का हृदयपरिवर्तन हो जाता है। और वह शीला को समाजसुधार करने में मदद करता है।

इस प्रकार 'कल्लो' उपन्यास की गौण पात्र शीला एक संस्कारशील, समाजसेवी, बुद्धिमानी, स्पष्टवादी तथा आधुनिक विचारों की नारी के रूप में दिखाई देती है।

3.3.4 सत्या :- "मिस सत्या बी. ए. प्रीवियस की शीला के कालेज की छात्रा है। वह मिस्टर खन्ना एडवोकेट की बेटी है। उसके पिता स्वभाव से महाकंजूस, महावहमी, महा घमंडी और दूसरों की झूठी-सच्ची बातों पर विश्वास करनेवाले हैं। वे सत्या को भी शक की नजर से देखते हैं।"[4]

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 59.
2. वही, पृ. 87.
3. वही, पृ. 88.
4. वही, पृ. 89.

"सत्या और रवि दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते है। दोनों बचपन के घनिष्ट मित्र है, फिर स्कूल और कालेज में इन्टर तक इकठ्ठे पढ़े हैं। वे दोनों एक-दूसरे को बेहद चाहते है। लेकिन सत्या के प्रोफेसर को यह सब अच्छा नहीं लगता और वे उन दोनों का प्रेमपत्र प्राप्त कर सत्या को धमकी देते है कि वह उसे उसके पिता को देंगे। या फिर वह उसे खुश कर दे। इससे सत्या एक बडी उलझन में पड जाती हैं। वह यह बात शीला को बताती है। एक तरफ वह अपनी पढाई छोडना नहीं चाहती दूसरी तरफ वह अपने स्त्रीत्व का सौदा भी नहीं करना चाहती। तब शीला कैलाश और राजेश की मदद से सत्या को इस उलझन से बचाती है। राजेश प्रो. अंशु से वह प्रेमपत्र प्राप्त कर लेता है और सत्या को इस उलझन से बाहर निकालते है।"[1]

3.3.5 राजेश :- राजेश कैलाश के कालेज का सहपाठी है। वे दोनों एक ही कमरे में रहते है। उन दोनों में गहरी दोस्ती है। वे दोनों एक दूसरे पर अपनी जान लुटाते हैं। कैलाश जब गाँव से वापस शहर आता है, तब वह बहुत उदास दिखाई देता है। राजेश के पूछने पर वह सारी हकीकत बता देता है, तब राजेश कैलाश से कहता है - "कैलाश ! तुम चिंता न करो, अब सब काम मेरा। मैं सब सँभाल लूँगा।" "भूल जाओ, उसे तो अब मैं ही याद रखूँगा ... तुम नहीं। अब तुम्हारा हिसाब मैं चुकाऊँगा उसके साथ। यह अपमान तुम्हारा नहीं हुआ, मेरा हुआ है।"[2] और वह युवक को मारने की तरकीबें सोचता है।

राजेश कालेज का माना हुआ गुंडा है। सब उसे 'दादा' कहकर बुलाते हैं। राजेश मिस सत्या का प्रेमपत्र प्रो. अंशु से वापस लेकर उसकी मदद करता है। अंत में कैलाश के मन से युवक की प्रतिशोध की भावना की आग बुझ जाती है। लेकिन राजेश उस आग को पुनः सुलगा देता है। राजेश उसे कहता है - "मैंने तो तुम्हारे अपमान का बदला लेने का वायदा किया था। मैं अपने वचन से मुखर नहीं सकता।"[3] और वह युवक को मारने के लिए निकल पडता है। तब कैलाश को लगता है कि वह जो कुछ भी कर रहा है, मेरे लिए ही कर रहा है और वह भी उसके पीछे चला जाता है और वे दोनों युवक को मारने के लिए गाँव के लिए निकल पडते हैं।

इसप्रकार राजेश और कैलाश में गहरी दोस्ती दिखाई देती है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 90.
2. वही, पृ. 80.
3. वही, पृ. 102.

3.4 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में चित्रित पात्र-परियोजना का अनुशीलन :

'सुलगती बर्फ' सुदर्शन भाटिया जी का दूसरा सामाजिक उपन्यास है। उपन्यास में प्रमुख पात्र और गौण पात्र का चित्रण मिलता है। विवेच्य उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में गिरीश और पुष्पा दिखाई देते है। इन प्रमुख पात्रों को छोडकर गौण पात्रों के रूप में सुमन, लाला माणिकचन्द्र, अटलजी, सतीश, लक्ष्मीदेवी (गिरीश की माँ), धन्ना (पुष्पा का नौकर), रामू (गिरीश का नौकर) निम्मी आदि का चरित्र परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा गौण पात्रों का चित्रण इसप्रकार है -

3.4.1 प्रमुख पात्र :- उपन्यास में मुख्यत: प्रमुख पात्र तथा गौण पात्र दो प्रकार के पात्र होते हैं। उपन्यास में प्रधानत: पात्रों के द्‌वारा ही कथानक को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। 'सुलगती बर्फ' उपन्यास के प्रमुख पात्र 'गिरीश' और 'पुष्पा' की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार से हैं -

3.4.1.1 गिरीश :- 'गिरीश' सुलगती बर्फ उपन्यास का केंद्रिय पुरुष पात्र है। उपन्यास की कथा गिरीश के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द है। वह कथानक के आरंभ से लेकर अंत तक उपन्यास में मौजूद है। जिसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं -

3.4.1.1.1 उपन्यास का नायक :- सुदर्शन भाटिया कृत 'सुलगती बर्फ' उपन्यास का केंद्रिय पात्र गिरीश है। वह विवेच्य उपन्यास का नायक है। गिरीश बडा ही होशियार और होनहार युवक है। वह अपनी माँ-बाप की एकलौती संतान है। "गिरीश कॉलेज में उच्च चरित्र विद्‌यार्थी था। उसका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया, शरीर गठा हुआ, अभिनय कला में सबके कान कतरने वाली आवाज सुरीली और सदा प्रसन्नचित्त रहता। गिरीश में हर अच्छे गुण थे।"[1] इस प्रकार गिरीश में वह सब गुण दिखाई देते हैं, जो एक नायक के लिए आवश्यक होते हैं।

3.4.1.1.2 अभिनेता गिरीश :- गिरीश के सर्वगुण संपन्न खूबसूरत और मेधावी होने के कारण वह कॉलेज का हीरो था। तभी तो फिल्मी जगत में उसे एकाएक हीरो की भूमिका भी मिल जाती है। लेकिन कुछ ही दिनों में गिरीश फिल्मी कैरियर छोड देता है। पुष्पा के पूछने पर वह स्पष्टीकरण देता है। गिरीश पुष्पा से कहता है - "मुझे फिल्मी जीवन से नफरत है। घृणा है। फिल्मों में काम

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 54.

करनेवाले परस्पर द्वेष की भावना की खाई में गले तक डूबे रहते हैं। वहाँ चरित्रहीनता का बोलबाला है। शराब पीना-पिलाना फैंशन है। लड़कियाँ भी इससे अछूती नहीं रहती। किसी की अस्मत लूट लेना, किसी का शील भंग कर देना, केवल खेल समान है। चरित्र नाम की तो कोई चीज ही नहीं। चांदी की झंकार में, न इज्जत, न प्यार। देह - भूख मिटाना ही उनका काम है।''[1] यह सब देखकर गिरीश को बहुत बुरा लगता है। इसके खिलाफ वह आवाज उठाता है, लेकिन वहाँ कोई किसी का नहीं।

इस प्रकार यह सब देखकर गिरीश अपना फिल्म कैरियर छोडता है। साथ ही उसे अपने अंदर के अभिनय को भी हमेशा हमेशा के लिए छोडना पडा।

3.4.1.1.3 कवि गिरीश :- गिरीश अभिनेता के साथ-साथ एक अच्छा कवि भी है। उसकी कविताएँ बडे-बडे समाचार पत्र तथा पत्रिका में छप जाती है। उसकी कविताएँ बहुत ही लोकप्रिय होती जा रही है।

दिल्ली में हो रहे निराला जी की जयंती समारोह में गिरीश भाग लेता है। वहाँ अनेक बड़े-बड़े कवि होते हैं। वहाँ सभी कवि अपनी नवीन, सारगर्भित, अर्थपूर्ण कविताओं को श्रोतागणों के सामने प्रस्तुत करते। वीर रस, हास्य रस के साथ-साथ वर्तमान समस्याओं को भी उजागर करते है। कुछ कवियों ने तो राजनीति पर तीखे कटाक्ष कसे। गिरीश भी अपनी कविताओं से श्रोताओं को आनंद देता है। गिरीश के कविता कहने के आकर्षक अदासे उसे उस दिन 'कविराज' की उपाधि से सम्मानित किया जाता है।''[2] इस प्रकार गिरीश एक अच्छा कवि दिखाई देता है।

3.4.1.1.4 प्रेमी के रूप में :- गिरीश के व्यक्तित्व की एक विशेषता है वह प्रेमी पात्र है। रेलयात्रा के दौरान गिरीश और पुष्पा की भेंट हो जाती है। उसी भेंट का रूपांतर प्यार में हो जाता है। फिर दोनों संग संग जीने मरने का अटूट वायदा कर देते हैं। गिरीश का प्यार के बारे में कहना है, कि - ''प्यार उसी से करना चाहिए, जो प्यार के अर्थ को समझ सके। जो पत्नी बनने योग्य हो। वह इतनी सशक्त और योग्य हो कि उसकी जगह कोई और न ले सके।''[3] उसकी इसी कसौटी पर पुष्पा ही उतरती है। वह उसके बारे में सोचता है, कि - ''मैं पुष्पा को अपने पहलू

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 21.
2. वही, पृ. 32.
3. वही, पृ. 55.

में पाकर, संसार की किसी भी अन्य वस्तु को पाने की तमन्ना न रखूँगा। यदि उसे पाने के लिए मुझे संघर्ष भी करना पडे तो भी मैं पीछे नहीं हटूँगा। पुष्पा ही मेरा जीवन है .... पुष्पा ही मेरा सर्वस्व। इसीलिए तो उसे पाने के लिए मैं बडे से बडा त्याग भी कर सकता हूँ। यदि उसे पाने के लिए दिसंबर जनवरी की खून तब जमा देनेवाली ठंडी रातों में, सारी रात नंगे बदन खुले आसमान के नीचे रहना पडे तो भी सहर्ष रह लूँगा।''[1]

इस प्रकार गिरीश पुष्पा के प्रति आकृष्ट होता है। गिरीश का व्यक्तित्व एक प्रेमी के रूप में दिखाई देता है।

3.4.1.1.5 गरीबों के प्रति आस्था रखनेवाला :- गिरीश गरीबों के प्रति आस्था रखता है। गिरीश जब दिल्ली से वापस अपने घर आता है। तब रेलयात्रा में गिरीश की जेब काटने का प्रयत्न एक गरीब लडका धन्ना करता है। तब रेल के सभी यात्री उस लडकों के रंगे हाथ पकड लेते हैं, लेकिन गिरीश उन लोगों से कहता है कि - ''यह लडका पेशे से जेबकतरा नहीं है। जरूरी उसकी कोई विवशता रही होगी।''[2] तब धन्ना अपनी सारी कहानी सुनाता है, कि उसके मामा की बेटी बहुत बीमार है उसकी दवा के लिए वह जेब काटने की कोशिश करता है। तब गिरीश उसे माफ करके उसे कुछ रुपये देता है और अपनी बहिन का इलाज करवाने को कहता है। इसप्रकार गिरीश एक गरीब बच्चे की सहायता करके उसे सही रास्ते पर चलने की सलाह देता है।

3.4.1.1.6 दहेज का विरोधी :- गिरीश दहेज लेन-देन के बिलकुल विरुद्ध है। जब गिरीश और सुमन की शादी तय हो जाती है, तब गिरीश के पिताजी सुमन के पिता से दहेज की माँग करते है। उसके पिता भी इससे सहमत होते है। लेकिन गिरीश उनसे मिलकर कहता है कि ''मैं केवल सुमन को स्वीकार करूँगा। इससे अधिक कुछ नहीं। यदि आपने दहेज के रूप में नगद या सामान, कुछ भी देने की चेष्टा की तो मैं सुमन को आपके घर पर ही छोड दूँगा। आप तो धनी है, सब कुछ दे सकते हैं। मगर उनका क्या होगा जिनकी तीन-तीन, चार-चार बेटियाँ हैं और घर में खाने तक को कुछ नहीं।''[3] इस प्रकार गिरीश दहेज लेने के विरोधी है।

3.4.1.1.7 आदर्श बेटा :- गिरीश अपनी माँ-बाप की इकलौती संतान है। इसलिए उसके माता-पिता उससे बहुत प्यार करते है। गिरीश भी अपने माता-पिता की कोई भी बात नहीं

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ.55, 56.
2. वही, पृ. 61.
3. वही, पृ. 117.

टालता। उसके हृदय में पिता के प्रति खूब आदर है। जब उसके पिता उसकी शादी सुमन से तय करते हैं, जिसे गिरीश अपनी बहन मानता है। यह बात सुमन के पिता जानते हुए भी वह इस शादी के लिए तैयार हो जाते है। तब गिरीश इस शादी के लिए इनकार कर देता है। इससे उसके पिता को बडा धक्का लगता है और उन्हें दिल का दौरा पड जाता है। गिरीश अपने पिता की जान बचाने के लिए अपने प्यार का त्याग कर देता है। गिरीश पुष्पा से प्यार करता है। उससे उन्हें जीवन साथी बनने का वचन दिया था। लेकिन पिता की यह हालत देखकर गिरीश सुमन के साथ शादी करने के लिए तैयार हो जाता है।

इसप्रकार गिरीश अपनी सारी इच्छा-आकांक्षाओं को त्यागकर माता-पिता को खुशी देता है। इससे यह दिखाई देता है कि गिरीश एक आदर्श बेटा है। इसप्रकार सुदर्शन भाटियाजी ने गिरीश के व्यक्तित्व को अभिनेता, कवि, प्रेमी, आदर्श बेटा, दहेज का विरोधी तथा गरीबों के प्रति आस्था रखनेवाला आदि विशेषताओं से चित्रित किया है।

3.4.1.2 पुष्पा :- 'सुलगती बर्फ' उपन्यास की पुष्पा केंद्रिय स्त्री पात्र है। प्रस्तुत उपन्यास में पुष्पा आरंभ से लेकर अंत तक मौजूद दिखाई देती है। वह एक मध्यवर्गीय स्त्री-पात्र है। पुष्पा की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार हैं -

3.4.1.2.1 उपन्यास की नायिका :- उपन्यास के विकास में नायिका का बड़ा स्थान होता है। इस बारे में डॉ. सुखदेव शुक्ल की मान्यता है - "हिंदी उपन्यास साहित्य के विकास का अध्ययन करते समय उपन्यास के नायक और खलनायक की उद्‌भावना के साथ-साथ उपन्यास की नायिका की उद्‌भावना का अध्ययन बहुत जरूरी है।"[1] अत: उपन्यास के विकास क्रम में नायिका का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है।

पुष्पा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास की नायिका है। वह मध्यवर्गीय परिवार की एक सुशिक्षित युवती है। पुष्पा और गिरीश एक दूसरे से प्रेम करते है। और दोनों एक-दूसरे को जीवनभर साथ देने का वचन देते हैं।

3.4.1.2.2 प्रेमिका के रूप में :- पुष्पा के व्यक्तित्व की एक विशेषता है - वह प्रेमी स्त्री पात्र है। रेलयात्रा के दौरान गिरीश और पुष्पा की भेंट हो जाती है। पुष्पा गिरीश की ओर एकटक

---

1. डॉ. सुखदेव शुक्ल - हिंदी उपन्यास का विकास और नैतिकता, पृ. 293.

देखती रहती है। उसे वह युवक 'आसमान का तारा' नामक फिल्म का हीरो दिखता है। लेकिन बाद में वह कहती है कि हिरो रेल में कैसे हो सकता है, वह तो अपनी बडी कार में घूमेगा और फिर वह उसे देखती है। इतनी देर से देख रही पुष्पा को गिरीश पूछता है कि इतनी देर से आप मेरी ओर क्या देख रही है? इस प्रश्न पर दोनों में तकरार होती है। और अंत में गिरीश अपनी पहचान देता है। दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते है। और उनमें प्रेम के बीज अंकुरित होते है। दोनों एक-दूसरे को जीवनसाथी बनने का वचन देते हैं। इस प्रकार पुष्पा का व्यक्तित्व प्रेमिका के रूप में दिखाई देता है।

3.4.1.2.3 स्पष्टवादी :- पुष्पा के व्यक्तित्व की विशेषता है - स्पष्टवादिता। वह किसी भी बात का स्पष्टता से गिरीश से कहती है। गिरीश दो-ढाई महिने बाद पुष्पा से मिलने जाता है, तब वह बीमार थी। गिरीश उससे मिलता है, वह कहता है - 'अपने मेहमान से बात नहीं करोगी?' तब पुष्पा कहती है - 'कौन मेहमान? कैसा अतिथि?' 'क्या आप मुझे अपना अतिथि नहीं समझती ?', 'आपको पता होना चाहिए कि बिन बुलाए अतिथि का कभी स्वागत नहीं होता।' तब गिरीश कहता है - "मुझे आप ही ने बुलाया था।" तब पुष्पा कहती है - "उस निमंत्रण की अवधि कब की समाप्त हो चुकी है। आप चाहे तो जा सकते है।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि पुष्पा स्पष्टवादी है।

3.4.1.2.4 जिज्ञासू :- जिस प्रकार हर मनुष्य में किसी-न-किसी बात को जानने की इच्छा होती है। उसी प्रकार 'सुलगती बर्फ' उपन्यास की पुष्पा भी इसके लिए अपवाद नहीं है। रेलयात्रा में जब गिरीश और पुष्पा की भेंट हो जाती है तब पुष्पा गिरीश के बारे में सबकुछ जानती है। गिरीश भी उसे अपनी सारी जानकारी देता है। तब आगे पुष्पा गिरीश से जानना चाहती है, कि "क्या आप ही 'गिरीश' है? जिनकी कविताएँ आजकल बहुत लोकप्रिय होती जा रही है। जिस भी किसी बडे समाचार पत्र, पत्रिका को उठा ले, उसी में कही-न-कही गिरीश रचित पंक्तियाँ मिल ही जाएगी।"[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि पुष्पा के मन में जिज्ञासा की वृत्ति दिखाई देती है। इसप्रकार पुष्पा का व्यक्तित्व जिज्ञासू है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 76, 77.
2. वही, पृ. 22.

3.4.1.2.5 वियोगी पुष्पा :- पुष्पा के व्यक्तित्व की एक और विशेषता दिखाई देती है, कि वह वियोगी है। पुष्पा गिरीश के प्यार में वियोगी हो जाती है। पहली मुलाकात में ही गिरीश और पुष्पा जीवनसाथी बनने का निश्चय कर देते है। उसके बाद गिरीश और पुष्पा एक-दूसरे से मिलते ही नहीं, न ही कोई फोन और न कोई चिठ्ठी आती है। तब पुष्पा उसके विरह में बीमार पड जाती है।

दो-ढाई महिने के बाद गिरीश जब पुष्पा से मिलने जाता है, "तब पुष्पा पुष्प न होकर सूखी पंखुडियों सी दिखाई दे रही थी। उसे पहचानना भी कठिन हो गया था। बर्फ की तरह ठंडी, गिरीश के प्यार में सुलगती हुई। सुलगती बर्फ थी वह।"[1]

इसप्रकार पुष्पा गिरीश के प्यार में वियोगी दिखाई देती है। इस प्रकार पुष्पा के व्यक्तित्व में प्रेमिका पुष्पा, स्पष्टवादी, जिज्ञासू, तथा वियोगी आदि विशेषताएँ परिलक्षित होती है।

3.4.2 गौण पात्र :- जो पात्र उपन्यास में प्रमुख न होकर सहायक होते हैं, उसे गौण पात्र कहा जाता है। इनका उपन्यास में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। ये पात्र कथानक को आगे बढ़ाने का कार्य करते है। 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में गौण पात्र के रूप में लाला माणिकचंद्र, सुमन, अटलजी, सतीश, धन्ना, तथा निम्मी आदि है। उनका अनुशीलन निम्नांकित हैं -

3.4.2.1 लाला माणिकचंद्र :- लाला माणिकचंद्र गिरीश के पिताजी है। पठानकोट में रहनेवाले बहुत बड़े जमींनदार है। उनकी एक बस कंपनी है। तीन-चार ट्रक हैं। एक आटा मिल है। "लाला माणिक चंद्र का चेहरा गोल, नाक छोटी पर कुछ अधिक मोटी थी। यदि नाक के सबसे ऊँचे भाग को बिंदु मान कर प्रकार से वृत्त लगाया जाय तो पेंसिल का सिक्का चेहरे के अंतिम छोर को छूता हुआ निकल जाएगा। इससे लाला के चेहरे के पूर्ण गोलाकार होने का प्रमाण मिलता है। मूँछे आयु के प्रमाद से श्वेत होने पर भी श्वेत न रह सकी। हुक्के के धुएँ से भूरी पड गई। लालाजी अब भी चोटी रखते हैं। गोल-मटोल टिंड पर चोटी का होना, उनकी प्राचीन सभ्यता में विश्वास की भावना जतलाती हैं।"[2]

गिरीश और उनका मित्र-सा व्यवहार है। जब गिरीश को 'कविराज' की उपाधि मिलती है, तब लालाजी को बहुत खुशी होती है। वे सब लोगों को मिठाई खिलाते है। लालाजी गिरीश

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 74.
2. वही, पृ. 47, 67, 68.

के विवाह के बारे में चिंतित होते है। वह हर बार गिरीश को शादी करने के लिए कहते है, लेकिन गिरीश ही किसी-न-किसी वजह बताकर इस बात को टाल देता है। लालाजी दहेज के लालची दिखाई देते है। तभी तो वे अपने बेटे का रिश्ता किसी बड़े घर में करना चाहते हैं। जब अटलजी अपनी एकलौती बेटी सुमन का रिश्ता लेकर आते हैं, तब वे उन्हें मुँह माँगा दहेज देने को तैयार हो जाते हैं। तब माणिकचंद्र जी को लगा जैसे कामधेनु गाय ही मिल गई हो। और अंत में माणिकचंद्र और अटलजी गिरीश को बिना बताए यह रिश्ता तय करते हैं। लेकिन गिरीश इस रिश्ते को इन्कार कर देता है, तो माणिकचंद्र कहते हैं, "उसे विवाह करना होगा तो केवल सुमन के साथ अटल की बेटी के साथ .... वरना मैं उसे धक्के मार कर घर से बाहर निकाल दूँगा। ऐसे में वह मेरा बेटा नहीं। मैं उसका बाप नहीं। यह मेरा अंतिम निर्णय है।"[1]

गिरीश सुमन को बहन मानता था। और जिसे एक बार बहन कहा वह कभी पत्नी नहीं बन सकती। और यह बात लालाजी को पता नहीं थी। वे अपनी बात पर अड़े थे। गिरीश के इन्कार से लालाजी बीमार पड़ जाते है। तब गिरीश को अपने पिताजी के लिए इस शादी के लिए 'हाँ' कहनी पड़ती है। अंत में लालाजी को अपनी पहली पत्नी और बेटी की याद आती है। तब वे अकेले में रो पडते है, यह गिरीश देखता है। तब वे सारी कहानी उसे बताते है। तब गिरीश अपनी बहन का पता लगाता है, तो वह सुमन ही थी। अंत में लाला माणिकचंद्र और अटलजी को पता चलता है कि सुमन और गिरीश सगे भाई-बहन है। तब गिरीश और पुष्पा की शादी हो जाती है।

3.4.2.2 सुमन :- सुमन 'सुलगती बर्फ' उपन्यास का दूसरा गौण पात्र है। सुमन अटलजी की इकलौती बेटी है। उसने बी. ए. किया है। सुमन एक सुशील और गुणवान बेटी है। वह घर के सभी कामों में निपुण है। अपने पिता से वह बहुत प्यार करती है। गिरीश की जान-पहचान न होते हुए भी वह उसे जब चोट लगती है, तब वह अपनी गाडी में लाकर उसे अपने घर लाकर उसकी सेवा-सुश्रुषा करती है। वही गिरीश जिसे अटलजी ने अपने घर बुलाया था। उसे सुमन ने ही घर लाते हुए देखकर वे बहुत खुश हो जाते हैं। उन्होंने पहले से ही मन-ही-मन गिरीश को दामाद मान चुके थे। चाय के बहाने वे उन दोनों को मिलाना चाहते थे। लेकिन सुमन ने ही उसे घर लाकर अटलजी का काम आसान कर दिया था।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 95.

लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। सुमन गिरीश की अच्छी सेवा करती है। तब वह गिरीश को अपने 'भाई' के रुप में देखती है। और उसके मुँह से अनायास ही 'भैया' शब्द निकलता है। तब गिरीश भी सुमन जैसी 'बहन' पाकर धन्य हो जाता है। गिरीश का भी भ्रातृ प्रेम उमड़ आता है। और वह उसे 'बहन' मानता है। लेकिन सुमन के पिताजी अटलजी इस बात पर ध्यान न देकर उन दोनों की शादी तय करना चाहते है और वे गिरीश के पिताजी से मिलने के लिए पठानकोट आते हैं। और वहाँ उन दोनों का रिश्ता तय करते है। लेकिन गिरीश और सुमन इस रिश्ते से इन्कार कर देते हैं। तब भी अटलजी जबरदस्ती यह रिश्ता करना चाहते थे। लेकिन अंत में पता चलता है, कि गिरीश और सुमन सगे भाई-बहन है। तब अटलजी यह रिश्ता तोडकर सुमन की शादी गिरीश के मित्र सतीश से करवाते है।

3.4.2.3 सतीश :- सतीश और गिरीश कॉलेज के साथी है। सतीश तीन सालों से लंदन में था। और अचानक वह गिरीश से मिलता है। दोनों एक दूसरे से मिलकर बहुत खुश हो जाते हैं। वे दोनों इतने विश्वसनीय दोस्त है, कि वे किसी भी बात को एक-दूसरे से छिपाते नहीं। गिरीश वक्त आने पर सतीश के लिए बडे-से बडा बलिदान देने को तैयार है। "सतीश भी गिरीश का राजदार है। कत्ल कर देने पर भी वह एक-दूसरे से छिपाएँगे नहीं। या यों कहें, उन दोनों में कोई राज था ही नहीं। सब कुछ स्पष्ट। सब कुछ खुला।"[1] गिरीश सतीश से विदेशी संस्कृति के बारे में जानना चाहता है। "वह अपनी धारणाओं के आधार पर पूछता रहा, कि वे कैसे रहते हैं। क्या खाते हैं। बच्चों का लालन-पालन, बुजुर्गों की स्थिति, धर्म में विश्वास, सामाजिक जीवन, परिवार, चिकित्सा प्रबंध, शिक्षा, परिवार नियोजन, सहकारिता"[2] आदि के विषय में जानना चाहता है। सतीश ने भी उसे वहाँ की सामाजिक, साहित्यिक और राजनैतिक तीनों अवस्थाओं का पूर्ण परिचय दिया। गिरीश अपने और पुष्पा के बारे में सतीश को बताता है। तब सतीश गिरीश को कहता है कि-"दोस्त, तुम इतना आगे बढ़ चुके हो। उसे तुम पर विश्वास है। दिल से प्यार करती है। तुम अब पीछे मत हटना। उसे कभी धोखा न देना। उसके दिल को ठेस मत पहुँचाना।"[3]

इस प्रकार गिरीश और सतीश में गहरी दोस्ती का चित्रण लेखक ने किया है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ.91.
2. वही, पृ. 91.
3. वही, पृ. 93.

3.4.2.4 अटलजी :- अटलजी 'सुलगती बर्फ' उपन्यास के महत्त्वपूर्ण गौण पात्र है। अटलजी पुराने कवि, कविराज की उपाधियों से सुशोभित है। उनकी आयु लगभग सत्तर-पिचहत्तर वर्ष होगी। उनकी आँखे अंदर धँसी थी। इन पर जडा था एक चश्मा। गिरीश को जब उन्होंने पहली बार देखा तो वे सोच रहे थे - "कितना सुंदर युवक है। शरीर सुदृढ। छाती चौडी। कद लंबा। रंग गोरा। चेहरे पर तेज। प्रखर बुद्धि, नौजवान। मुझे ऐसे ही एक युवक की तलाश थी .. आज मिल गया। शायद मैं इसी की बाट जोह रहा था। गिरीश मेरी सुमन के लिए उपयुक्त वर रहेगा। कितनी अच्छी जोडी बनेगी। दोनों खूब जचेंगे। गिरीश को पाकर मेरी बेटी सुमन बेहद प्रसन्न होने लगेगी। बेटी को प्रसन्न रखना ही मेरा ध्येय है।"[1]

इसप्रकार अटलजी गिरीश को अपने दामाद के रूप में पसंद करते है। और उसे चाय पीने के लिए अपने घर निमंत्रित करते है। लेकिन भाग्यवश सुमन को ही गिरीश मिलता है और वह उसे घर लाती है। तब वे दोनों एक-दूसरे को भाई-बहन के रूप में देखते हैं। यह बात अटलजी को मालूम होते हुए भी वे उन दोनों की शादी करना चाहते हैं। लेकिन सुमन और गिरीश इस शादी के लिए इन्कार कर देते है। लेकिन अटलजी इस बात पर ध्यान न देकर गिरीश के घर जाकर उनका रिश्ता तय करते है। और शादी में जितना चाहे उतना दहेज देने के लिए तैयार हो जाते है। गिरीश के माता-पिता भी इस रिश्ते से खुश हो जाते है। लेकिन उनको यह पता नहीं था, कि गिरीश और सुमन एक-दूसरे को भाई-बहन मानते हैं। सुमन जब इस शादी के लिए तैयार नहीं होती तब अटलजी उसे समझाते है - "बेटी ! विवाह से पहले हर युवक को भाई ही समझना चाहिए। .... और हाँ, राय तो तब लेता जब लडके में कोई कमी होती। मेरी जानकारी में उससे अच्छा लडका और कोई नहीं था। इसीलिए मैंने गिरीश को चुना। घराना बहुत अच्छा है। गिरीश पढ़ा-लिखा है। योग्य है। सुशील है। स्वस्थ्य है। सुसंस्कृत है। इससे उपर और क्या चाहिए हमें? स्वयं को धन्य मानो बेटी गिरीश के माता-पिता तुम्हें बिना देखे ही मान गए।"[2] और वे सुमन के इन्कार के बावजूद शादी की तैयारियाँ करते है। लेकिन अंत में पता चलता है कि सुमन और गिरीश सगे भाई बहन है। तब अटलजी भी इस शादी के लिए तैयार नहीं होते और सुमन की शादी कहीं और की जाती है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ.31.
2. वही, पृ. 110.

3.4.2.5 धन्ना :- धन्ना पुष्पा के घर का नौकर है। वह गुरदासपुर के एक गाँव का है। गिरीश और धन्ना की भेंट रेल में होती है। जब गिरीश दिल्ली से पठानकोट आ रहा था, तब धन्ना रेल में गिरीश की जेब काटते हुए पकडा जाता है। तब गिरीश उसका साथ देकर कहता है, कि यह पेशे से जेबकतरा नहीं है। जरूर इसके पीछे कोई वजह होगी। तब वे धन्ना से सारी बातें पूछते है तब धन्ना कहता है - "मैं नहीं जानता कि मेरे माता-पिता कौन थे? कहाँ रहते थे। धनी थे अथवा निर्धन। जब से मैंने होश संभाला है। मैंने अपने आपको मामा-मामी के संरक्षण में पाया है। वही मेरे लिए माता-पिता हैं। उनकी एक बेटी है, नाम 'नीलम'। जब वह अपनी माँ जी को 'माँ' कहकर पुकारती है, तो मेरा भी ऐसा ही मन करता। मैंने भी उन्हें माँ-बापू कहना शुरू कर दिया। यह सुनकर मामी मुझे मारने लगती। मामा-मामी कहने पर मजबूर करती। तब तक मैं माँ और मामी का अंतर न जानता था। अब मैं इस अंतर को भली प्रकार समझने लगा। माँ घी में चुपडी गर्म रोटी देती है। मामी सूखी बासी रोटी देने वाली होती है।"[1] इस प्रकार वह अपनी सारी कहानी सुनाता है। आगे वह कहता है, कि मामा-मामी के मौत के पश्चात 'नीलम' निम्मो बीमार है और उसकी दवा-दारू के लिए मेरे पास इतने पैसे न होने के कारण मैंने चोरी करनी चाही। तब गिरीश उसे कुछ रुपए और अपना कार्ड देता है। और उसे मिलने के लिए कहता है।

गिरीश जब पुष्पा से मिलने के लिए जालंधर जाता है, तब पुष्पा के घर धन्ना की भेंट हो जाती है। धन्ना उसके घर नौकर का काम करता है। गिरीश के पूछने पर वह कहता है, कि मैं निम्मी का विवाह कर देना चाहता हूँ। और मामा-मामी की इच्छा पूरी करना चाहता हूँ। तब गिरीश उसकी शादी अपने घर के नौकर रामू के साथ तय करता है। तब धन्ना बहुत खुश हो जाता है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि समाजवादी लेखक सुदर्शन भाटिया जी ने 'कल्लो' उपन्यास के पात्रों द्वारा समाज-सुधार की आवश्यकता कथन की है। इससे युवक (परदेसी), शीला आदि पात्रोंद्वारा परिलक्षित होता है। युवक गाँव-गाँव जाकर समाज-सुधार करता है। शीला मिस सत्या की सहायता कर समाज-सुधार करना चाहती है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 59.

'कल्लो' उपन्यास में पात्रों का चित्रण अत्यंत सजीव एवं मार्मिक ढंग से किया है। पात्रों में व्यवहारकुशलता, समाजसेवी, अत्याचार का विरोध, स्पष्टवादी, भावुकता आदि विशेषताएँ परिलक्षित होती है।

सुदर्शन भाटिया जी का दूसरा सामाजिक उपन्यास 'सुलगती बर्फ' द्वारा प्रेम और जीवन संघर्ष दिखाया गया है। गिरीश और पुष्पा को अपने प्रेम को पाने के लिए बहुत संघर्ष करना पडता है। गिरीश के प्यार में पुष्पा 'सुलगती बर्फ' की तरह होती है। लेकिन अंत में गिरीश की सूझबूझ से वे दोनों एक हो जाते है।

इस प्रकार उपन्यास के पात्र स्पष्टवादी, जिज्ञासू, गरीबों की सहायता करनेवाला आदर्श बेटा के रूप में दिखाई देतें है।

अत: भाटिया जी ने विवेच्य उपन्यासों में पात्रों द्वारा समाज की दुर्बलता तथा व्यवस्था को यथार्थ रूपों में स्पष्ट किया है।

-----x-----